मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

# MHD–022

## हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

## (एम. एच. डी.)

## सत्रांत परीक्षा

## जून, 2026

## एम.एच.डी.-022 : कबीर का विशेष अध्ययन

*समय : 2 घण्टे* *अधिकतम अंक : 50*

---

***नोट :*** *प्रश्न संख्या **1** अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) मेरे मन में पड़ि गई, ऐसी एक दरार।

फटा फटक पषाँण ज्यूँ, मिल्या न दूजी बार॥

(ख) दैखत नैन चल्या जग जाई।

इक लष पूत सवा लष नाती, ता रावन घरि दिया न बाती।

लंका सी कोट समंद सी खाईं, ता रावन की खबरि न पाई।

आवत संग न जात संगाती, कहा भयौ दरि बाँधे हाथी॥

कहै कबीर अंत की बारी, हाथ झाड़ि जैसे चले जुवारी॥

(ग) बोलनाँ का कहिये रे माई, बोलत बोलत तत नसाई॥

बोलत बोलत बढ़ै बिकारा, बिन बोल्याँ क्यूँ होइ बिचारा॥

संत मिलै कछु कहिये कहिये, मिलै असंत पुष्टि करि रहिये॥

ग्याँनी सूँ बोल्या हितकारी, मूरिख सूँ बोल्याँ झष मारी॥

कहै कबीर आधा घट डोलै, भर्‌या होइ तौ मुषाँ न बोलै॥

(घ) एक कनक अरु काँमनी, विष फल कीएउ पाइ।

देखै ही थै विष चढ़ै, खाँयै सूँ मरि जाइ॥

2. कबीर के काव्य में निर्गुण और सगुण भावों का विवेचन कीजिए। 10

3. कबीर युगीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण कीजिए। 10

4. कबीर के काव्य में 'माया' के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 10

5. कबीर की कविता में रूढ़िवाद के विरुद्ध विचारों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$2 \times 5 = 10$

(क) हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में कबीर

(ख) कबीर के काव्य में लोकतत्व

(ग) नाथपंथ और कबीर का काव्य

(घ) उलट बाँसी

× × × × ×